



Indreshwar giri

28 Sep 1976

09:55 AM

Digboi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121429201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 28/09/1976
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 09:55:00 घंटे
इष्ट _____: 12:10:09 घटी
स्थान _____: Digboi
राज्य _____: Assam
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 95:34:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:52:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:47:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:09:18 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:15:34 घंटे
सूर्योदय _____: 05:02:56 घंटे
सूर्यास्त _____: 16:57:25 घंटे
दिनमान _____: 11:54:29 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 11:38:20 कन्या
लग्न के अंश _____: 15:09:45 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अनुराधा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: प्रीति
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नू-नूर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1898	आश्विन	6
पंजाबी	संवत : 2033	आश्विन	13
बंगाली	सन् : 1383	आश्विन	12
तमिल	संवत : 2033	पुरुटासी	13
केरल	कोल्लम : 1152	कन्नी	13
नेपाली	संवत : 2033	आश्विन	13
चैत्रादि	संवत : 2033	आश्विन	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2033	आश्विन	शुक्ल 5

पंचांग

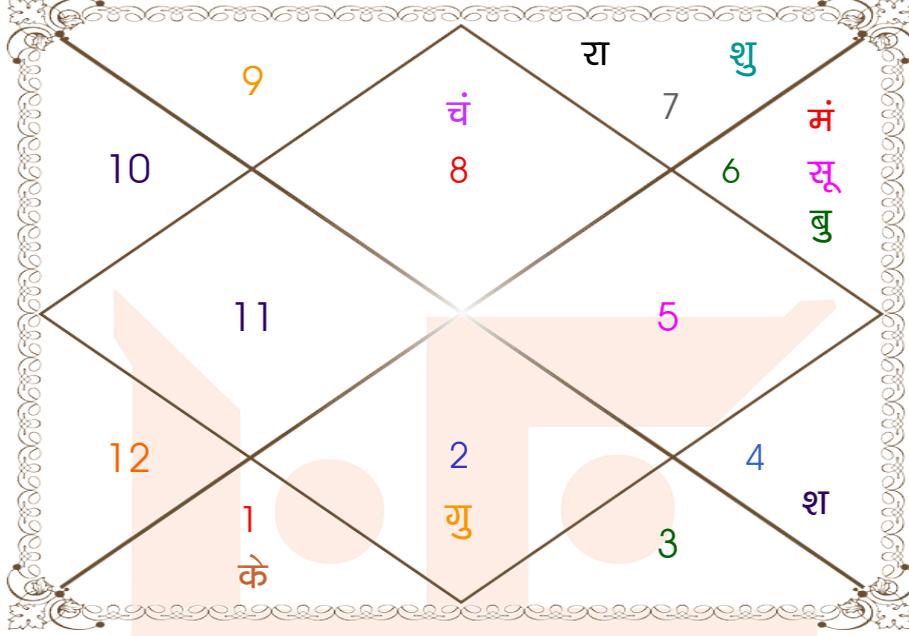
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 09:25:07
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:52:17 घंटे
जन्म योग _____ : अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
योग समाप्ति काल _____ : 14:47:09 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 09:25:07 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 35:34:50
भभोग _____ : 55:28:02
भोग्य दशा काल _____ : शनि 6 वर्ष 9 मा 6 दि

घात चक्र

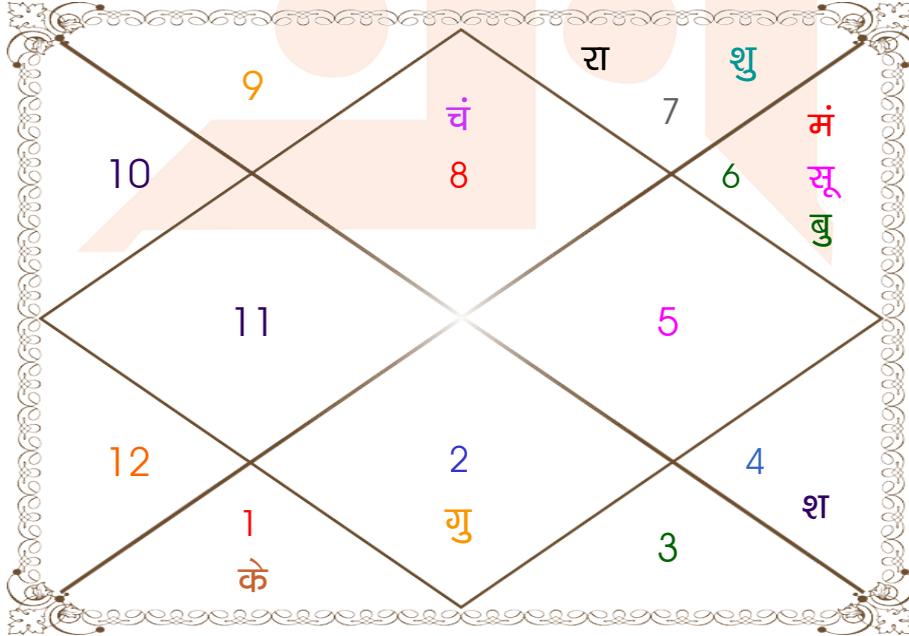
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	के	गु	
			श
	चं ल	रा शु	बु सू मं

लग्न कुण्डली

गु	के	
श		
बु सू मं	शु रा	ल चं

विंशोत्तरी
शनि 6वर्ष 9मा 6दि
शनि

28/09/1976

05/07/2084

शनि	06/07/1983
बुध	05/07/2000
केतु	06/07/2007
शुक्र	06/07/2027
सूर्य	06/07/2033
चन्द्र	06/07/2043
मंगल	06/07/2050
राहु	05/07/2068
गुरु	05/07/2084

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 5मा 3दि
सिद्धा

02/03/2025

02/03/2032

सिद्धा	12/07/2026
संकटा	31/01/2028
मंगला	11/04/2028
पिंगला	31/08/2028
धान्या	02/04/2029
भ्रामरी	11/01/2030
भद्रिका	01/01/2031
उल्का	02/03/2032

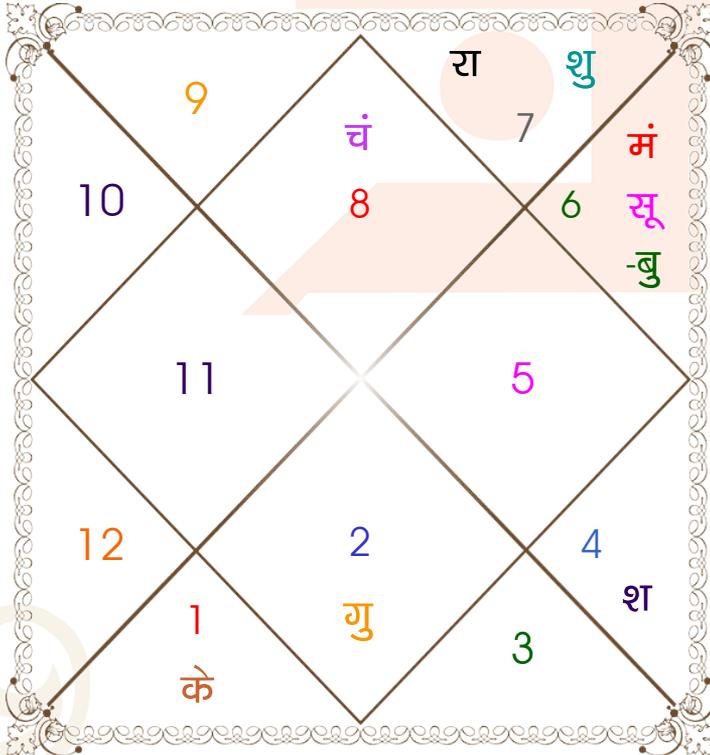
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	15:09:45	311:32:13	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
सूर्य			कन्या	11:38:20	00:58:55	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	11:55:01	14:23:01	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	नीच राशि
मंगल		अ	कन्या	29:17:48	00:40:04	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
बुध		व	कन्या	00:22:18	00:30:01	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	उच्च राशि
गुरु		व	वृष	07:33:13	00:01:42	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	08:55:22	01:13:31	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण
शनि			कर्क	20:10:38	00:05:46	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			तुला	10:16:16	00:01:11	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	गुरु	मित्र राशि
केतु			मेष	10:16:16	00:01:11	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	मित्र राशि
हर्ष			तुला	11:58:22	00:03:22	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
नेप			वृश्चि	18:00:45	00:01:09	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
प्लूटो			कन्या	17:48:20	00:02:20	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
दशम भाव			सिंह	24:23:24	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	बुध	--

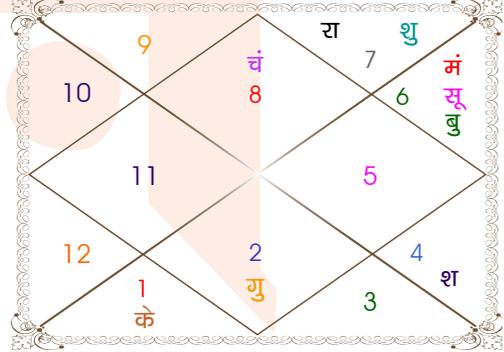
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:05

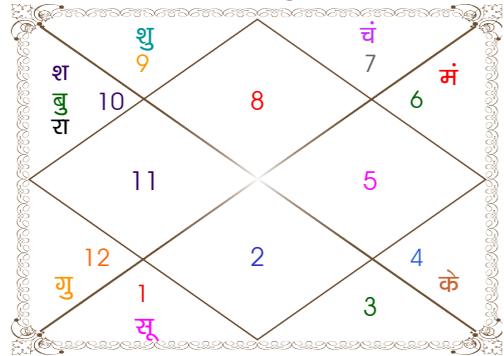
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 01:42:02	वृश्चिक 15:09:45
2	धनु 01:42:02	धनु 18:14:18
3	मकर 04:46:35	मकर 21:18:51
4	कुम्भ 07:51:07	कुम्भ 24:23:24
5	मीन 07:51:07	मीन 21:18:51
6	मेष 04:46:35	मेष 18:14:18
7	वृष 01:42:02	वृष 15:09:45
8	मिथुन 01:42:02	मिथुन 18:14:18
9	कर्क 04:46:35	कर्क 21:18:51
10	सिंह 07:51:07	सिंह 24:23:24
11	कन्या 07:51:07	कन्या 21:18:51
12	तुला 04:46:35	तुला 18:14:18

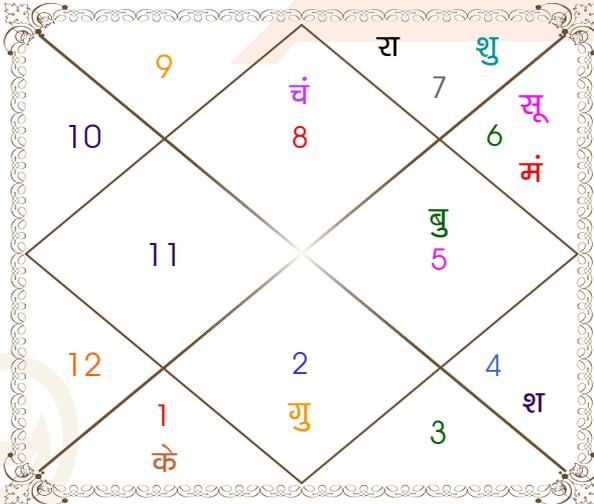
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	15:09:45
2	धनु	16:00:57
3	मकर	19:53:52
4	कुम्भ	24:23:24
5	मीन	25:32:10
6	मेष	21:57:17
7	वृष	15:09:45
8	मिथुन	16:00:57
9	कर्क	19:53:52
10	सिंह	24:23:24
11	कन्या	25:32:10
12	तुला	21:57:17

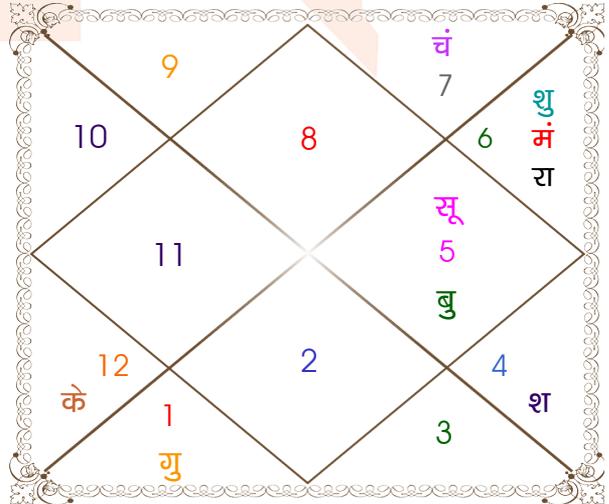
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 9 मास 6 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
28/09/1976	06/07/1983	05/07/2000	06/07/2007	06/07/2027
06/07/1983	05/07/2000	06/07/2007	06/07/2027	06/07/2033
00/00/0000	बुध 02/12/1985	केतु 01/12/2000	शुक्र 05/11/2010	सूर्य 24/10/2027
00/00/0000	केतु 29/11/1986	शुक्र 01/02/2002	सूर्य 05/11/2011	चंद्र 23/04/2028
00/00/0000	शुक्र 29/09/1989	सूर्य 08/06/2002	चंद्र 06/07/2013	मंगल 29/08/2028
00/00/0000	सूर्य 05/08/1990	चंद्र 07/01/2003	मंगल 05/09/2014	राहु 24/07/2029
28/09/1976	चंद्र 05/01/1992	मंगल 06/06/2003	राहु 04/09/2017	गुरु 12/05/2030
चंद्र 07/01/1977	मंगल 01/01/1993	राहु 23/06/2004	गुरु 05/05/2020	शनि 24/04/2031
मंगल 16/02/1978	राहु 21/07/1995	गुरु 30/05/2005	शनि 06/07/2023	बुध 28/02/2032
राहु 23/12/1980	गुरु 26/10/1997	शनि 09/07/2006	बुध 06/05/2026	केतु 05/07/2032
गुरु 06/07/1983	शनि 05/07/2000	बुध 06/07/2007	केतु 06/07/2027	शुक्र 06/07/2033

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
06/07/2033	06/07/2043	06/07/2050	05/07/2068	05/07/2084
06/07/2043	06/07/2050	05/07/2068	05/07/2084	00/00/0000
चंद्र 06/05/2034	मंगल 02/12/2043	राहु 18/03/2053	गुरु 23/08/2070	शनि 09/07/2087
मंगल 05/12/2034	राहु 20/12/2044	गुरु 12/08/2055	शनि 06/03/2073	बुध 18/03/2090
राहु 05/06/2036	गुरु 26/11/2045	शनि 18/06/2058	बुध 12/06/2075	केतु 27/04/2091
गुरु 05/10/2037	शनि 04/01/2047	बुध 04/01/2061	केतु 18/05/2076	शुक्र 27/06/2094
शनि 06/05/2039	बुध 02/01/2048	केतु 22/01/2062	शुक्र 17/01/2079	सूर्य 09/06/2095
बुध 05/10/2040	केतु 30/05/2048	शुक्र 22/01/2065	सूर्य 05/11/2079	चंद्र 28/09/2096
केतु 06/05/2041	शुक्र 30/07/2049	सूर्य 17/12/2065	चंद्र 06/03/2081	00/00/0000
शुक्र 04/01/2043	सूर्य 05/12/2049	चंद्र 18/06/2067	मंगल 10/02/2082	00/00/0000
सूर्य 06/07/2043	चंद्र 06/07/2050	मंगल 05/07/2068	राहु 05/07/2084	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 6 वर्ष 9 मा 22 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 06/07/2023 06/05/2026	शुक्र - केतु 06/05/2026 06/07/2027	सूर्य - सूर्य 06/07/2027 24/10/2027	सूर्य - चंद्र 24/10/2027 23/04/2028	सूर्य - मंगल 23/04/2028 29/08/2028
बुध 30/11/2023 केतु 29/01/2024 शुक्र 19/07/2024 सूर्य 09/09/2024 चंद्र 04/12/2024 मंगल 03/02/2025 राहु 08/07/2025 गुरु 23/11/2025 शनि 06/05/2026	केतु 31/05/2026 शुक्र 10/08/2026 सूर्य 31/08/2026 चंद्र 06/10/2026 मंगल 30/10/2026 राहु 02/01/2027 गुरु 28/02/2027 शनि 07/05/2027 बुध 06/07/2027	सूर्य 12/07/2027 चंद्र 21/07/2027 मंगल 27/07/2027 राहु 12/08/2027 गुरु 27/08/2027 शनि 13/09/2027 बुध 29/09/2027 केतु 05/10/2027 शुक्र 24/10/2027	चंद्र 08/11/2027 मंगल 18/11/2027 राहु 16/12/2027 गुरु 09/01/2028 शनि 07/02/2028 बुध 04/03/2028 केतु 15/03/2028 शुक्र 14/04/2028 सूर्य 23/04/2028	मंगल 01/05/2028 राहु 20/05/2028 गुरु 06/06/2028 शनि 26/06/2028 बुध 14/07/2028 केतु 22/07/2028 शुक्र 12/08/2028 सूर्य 18/08/2028 चंद्र 29/08/2028
सूर्य - राहु 29/08/2028 24/07/2029	सूर्य - गुरु 24/07/2029 12/05/2030	सूर्य - शनि 12/05/2030 24/04/2031	सूर्य - बुध 24/04/2031 28/02/2032	सूर्य - केतु 28/02/2032 05/07/2032
राहु 17/10/2028 गुरु 30/11/2028 शनि 21/01/2029 बुध 09/03/2029 केतु 28/03/2029 शुक्र 22/05/2029 सूर्य 07/06/2029 चंद्र 05/07/2029 मंगल 24/07/2029	गुरु 01/09/2029 शनि 17/10/2029 बुध 27/11/2029 केतु 14/12/2029 शुक्र 01/02/2030 सूर्य 16/02/2030 चंद्र 12/03/2030 मंगल 29/03/2030 राहु 12/05/2030	शनि 06/07/2030 बुध 24/08/2030 केतु 13/09/2030 शुक्र 10/11/2030 सूर्य 28/11/2030 चंद्र 26/12/2030 मंगल 16/01/2031 राहु 09/03/2031 गुरु 24/04/2031	बुध 07/06/2031 केतु 25/06/2031 शुक्र 16/08/2031 सूर्य 31/08/2031 चंद्र 26/09/2031 मंगल 14/10/2031 राहु 30/11/2031 गुरु 10/01/2032 शनि 28/02/2032	केतु 07/03/2032 शुक्र 28/03/2032 सूर्य 04/04/2032 चंद्र 14/04/2032 मंगल 22/04/2032 राहु 11/05/2032 गुरु 28/05/2032 शनि 17/06/2032 बुध 05/07/2032
सूर्य - शुक्र 05/07/2032 06/07/2033	चंद्र - चंद्र 06/07/2033 06/05/2034	चंद्र - मंगल 06/05/2034 05/12/2034	चंद्र - राहु 05/12/2034 05/06/2036	चंद्र - गुरु 05/06/2036 05/10/2037
शुक्र 04/09/2032 सूर्य 22/09/2032 चंद्र 23/10/2032 मंगल 13/11/2032 राहु 07/01/2033 गुरु 25/02/2033 शनि 23/04/2033 बुध 14/06/2033 केतु 06/07/2033	चंद्र 31/07/2033 मंगल 18/08/2033 राहु 02/10/2033 गुरु 12/11/2033 शनि 30/12/2033 बुध 11/02/2034 केतु 01/03/2034 शुक्र 21/04/2034 सूर्य 06/05/2034	मंगल 18/05/2034 राहु 19/06/2034 गुरु 18/07/2034 शनि 20/08/2034 बुध 20/09/2034 केतु 02/10/2034 शुक्र 07/11/2034 सूर्य 17/11/2034 चंद्र 05/12/2034	राहु 25/02/2035 गुरु 09/05/2035 शनि 04/08/2035 बुध 21/10/2035 केतु 22/11/2035 शुक्र 21/02/2036 सूर्य 19/03/2036 चंद्र 04/05/2036 मंगल 05/06/2036	गुरु 09/08/2036 शनि 25/10/2036 बुध 02/01/2037 केतु 30/01/2037 शुक्र 21/04/2037 सूर्य 16/05/2037 चंद्र 25/06/2037 मंगल 24/07/2037 राहु 05/10/2037

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

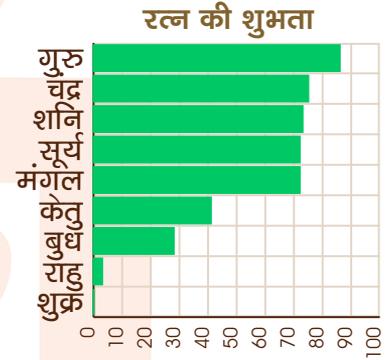
मूलांक	1
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 6
शत्रु अंक	3, 5,
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	86%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	75%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
नीलम	शनि	73%	भाग्योदय, पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	72%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	72%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	41%	शत्रु व रोग, हानि
पन्ना	बुध	28%	हानि, दुर्घटना
गोमेद	राहु	3%	व्यय
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	06/07/1983	59%	62%	59%	41%	86%	0%	86%	16%	16%
बुध	05/07/2000	78%	62%	72%	52%	86%	0%	73%	3%	41%
केतु	06/07/2007	59%	62%	78%	28%	86%	0%	61%	0%	58%
शुक्र	06/07/2027	59%	62%	72%	41%	86%	7%	80%	16%	52%
सूर्य	06/07/2033	84%	81%	78%	28%	92%	0%	61%	0%	16%
चंद्र	06/07/2043	78%	88%	72%	41%	86%	0%	73%	0%	16%
मंगल	06/07/2050	78%	81%	84%	3%	92%	0%	73%	0%	52%
राहु	05/07/2068	59%	62%	59%	28%	86%	0%	80%	28%	16%
गुरु	05/07/2084	78%	81%	78%	3%	98%	0%	73%	3%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आधिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक,

मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(06/07/2007 - 06/07/2027)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 06/07/2007 को आरम्भ और 06/07/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बारीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

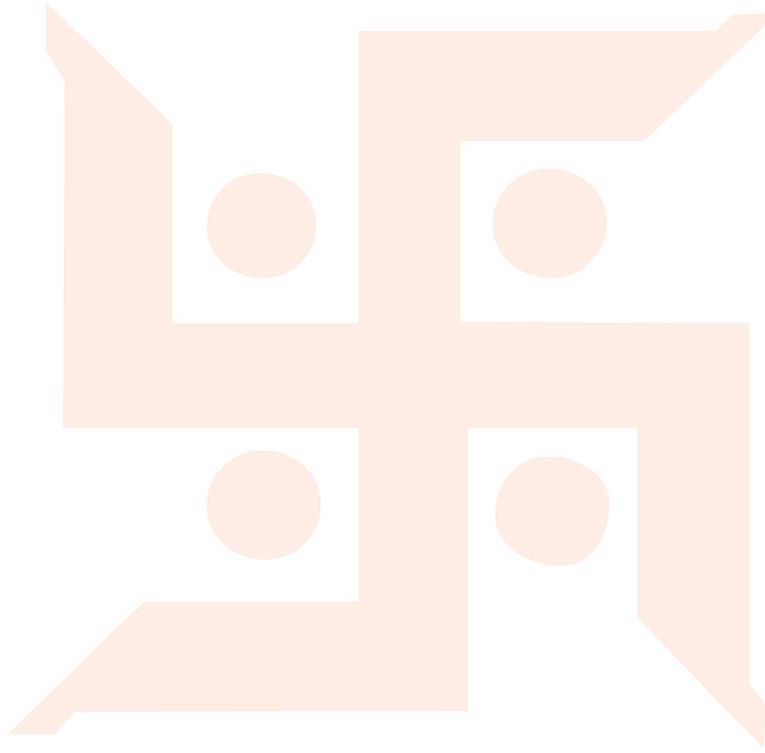
अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होंगे। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- सूर्य
(06/07/2027 - 06/07/2033)

सूर्य की महादशा 06/07/2027 को आरंभ और 06/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य हैं। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्दपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रुचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके

संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रुचि होगी।



अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(06/07/2027 - 24/10/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/07/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 24/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको मान-सम्मान प्राप्त होगा। सरकार और सम्मानीय नागरिकों से मान्यता और प्रशंसा की उपलब्धि होगी। आपके मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। वे आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेंगे और संभ्रांत वर्ग के विद्वान व्यक्ति होंगे। जो भी काम आप करेंगे, सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से या संतान के कारण धन प्राप्त होगा। मंत्रों और सिद्धियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी की संपदा में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदार के साथ संबंध मधुर रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय आकांक्षाओं की पूर्ति ओर परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने का है। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

मसालेदार भोजन से परहेज करें क्योंकि पेट खराब हो सकता है। कैल्शियम की कमी से शरीर के नीचे के अंगों में कोई समस्या हो सकती है। इसके लिए दुग्ध, शहद का सेवन अधिक करें और अग्नि को दूध अर्पित करें। आटे, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(24/10/2027 - 23/04/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 06/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 23/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपके स्वास्थ्य और धन की स्थिति उत्तम रहेगी। मान, सम्मान और साख उत्तम रहेंगे। पारिवारिक स्थिति प्रसन्नतापूर्ण रहेगी। माता के साथ संबंध मधुर होंगे। माता को लोकप्रियता और सफलता मिलेगी। आप निवास या व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन करना चाहेंगे। जीवन में उत्थान होगा, संपर्कों के कारण धन आएगा। संतान सुखदायी होगी। उनका भाग्य चमकेगा। आपकी रुचि कला में बढ़ेगी। ज्योतिष, दर्शन और भाषाओं में भी मन लगेगा। नौकरी में लगे व्यक्तियों के लिए समय परिवर्तन का रहेगा। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे। सलाहकारों के लिए समय उत्तम है। आपका विवाह हो सकता है। अगर विवाहित हैं तो पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

मिज़ाज में अकस्मात परिवर्तन, श्वसनतंत्र की व्याधियों और अल्पनिद्रा से सावधान रहें। अशुभत्व से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(23/04/2028 - 29/08/2028)**

आपकी सूर्य की महादशा 06/07/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 29/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई-बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई-बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(29/08/2028 - 24/07/2029)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 29/08/2028 को प्रारंभ होकर 24/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में भाग्य मध्यम रहेगा। धर्म और अध्यात्म में समय व्यतीत करेंगे। कार्यों में विरोध हो सकता है, अतः विवाद से बचें। शत्रुओं का नाश होगा। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। समाज सेवा से लाभ होगा।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है, मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति उत्तम रहेगी। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और उनकी व्यस्तता बढ़ेगी। माता की धर्म में रुचि बढ़ेगी। भाई-बहनों को कार्य में लाभ होगा और ख्याति मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। काफी दिनों से चल रही बीमारी से सावधान रहें, विशेषतः नेत्रों और अस्थियों का ध्यान रखें; ज्वर आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें

और नीले पदार्थों का दान करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(24/07/2029 - 12/05/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 24/07/2029 को प्रारंभ होकर 12/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धनवान, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। अनुबंधों से लाभ होगा। मुकदमें में विजय मिलेगी। विवाह संभव है। ससुराल से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन-धान्य से युक्त रहेंगे। लघु यात्राएं हो सकती हैं। कला और साहित्य में रुचि हो सकती है। सब प्रकार से धन मिलेगा, पुरस्कृत होंगे, इच्छाओं की पूर्ति होगी।

जीवनसाथी को समृद्धि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; यात्राएं होंगी, सर्जनात्मक कार्यों में रुचि और सट्टेबाजी में लाभ संभावित हैं। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपके पिता को धन की प्राप्ति होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, निवेश से लाभ मिलेगा। माता की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी होगी। भाई-बहनों का समय समृद्ध रहेगा। उन्हें सफलता प्राप्त होगी। आपकी संतान वाक्शक्ति में पटु होगी और शिक्षा में प्रगति करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारीवर्ग को यथास्थिति बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। पेट की शिकायतों, मधुमेह और मोटापे से बचाव करें। दुखों से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(12/05/2030 - 24/04/2031)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 12/05/2030 को प्रारंभ होगी और 24/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी लंबी यात्रा से लाभ हो सकता है। संतान और छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। लेखन से धन आ सकता है। यात्रा, उपहार, दान में धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी। मातहतों एवं सहकर्मियों का सहयोग मिलता रहेगा।

जीवनसाथी को परिश्रम करना होगा। पिता का समय भाग्यशाली और समृद्ध रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। माता का समय सामान्यतः उत्तम रहेगा; उन्हें मामूली स्वास्थ्य-समस्या हो सकती है। भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान सुखी होगी और आपको सुख देगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा, मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। व्यापारियों के लिए कुछ परिवर्तन का योग है।

स्नायुतंत्र, पैरों की व्याधि या गठिया से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए भैरव के रूप में शिवजी की उपासना करें।

